https://universitynews.in/

M.A. (Previous) EXAMINATION, 2018

HINDI

Third Paper

(प्राचीन काव्य)

Time allowed: Three hours **Maximum marks: 100**

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर की अधिकतम सीमा 500 शब्द है।

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये--

(क) भइ जु आनि आवाज, आय साहाबदीन सुर ।
आज गहौं प्रथिराज बोल बुल्लंत गजतधुर ।।
क्रौंध जोध जोधा अनंत, करिय पती अनिगज्जिय।
बान नालि हथनालि, तुपक तीरह श्रब सज्जिय।।
पवै पहार मनो सार के, भिरि भुजांन गजनेस बल।
आये हकारि हंकार करि, षुरासान सुलतान दल।। 9

अथवा

बज्जिय घोर निसांन, रॉन चौहान चिहौ दिस
सकल सूर सामन्त, समरि बल जंत्र मंत्र तंस
उट्ठि राज प्रथिराज, बाग मनो लग बीर नट
कढ़त तेग मनो बेग, लगत मनो बीज झट्ट घट
घट थकि रहे सूर कौतिग गिगन, रगन मगन भइ श्रोन धर
हर हरषि वीर जग्गे हुलस हुख रंगि नव रत्त वर 9

(ख) मानसरोदक बरनौं काहा। भरा समुद अस अति अवगाहा
पानि मोति अस निरमल तासू। अमृत आनि कपूर सुबासू
लंकदीप के सिला अनाई। बांधा सरवर घाट बनाई
खंड़-खंड़ सीढ़ी भई गरेरी। उतरहिं चढ़हिं लोग चहुँ फेरी
फूला कंवल रहा होइ राता। सहस-सहस पखुरिन कर छाता।।
उलथहि सीप, मोति उतराहीं । चुगहिं हंस औ केलि कराहीं।।
खनि पतार पानी तहं काढ़ा। छीरसमुद निकसा हुत बाढ़ा ।।
ऊपर पाल चहूँ दिसि, अमृत-फल सब रूख।
देखि रूप सरवर कै, गै पियास औ भूख।। 9

अथवा

नागमति चितउर पँथ हेरा। पीउ जो गए फिरी कीन्ह न फेरा
नागरि नारि काहु बस परा। तेहि बिमोहि मोसों चितु हरा
सुवाकाल होइ लै गा पीऊ। पिउ नही लेत लेत बरु जीऊ
भएउ नरायन बाबन करा। राज करत बलि राजा छरा

https://universitynews.in/

https://universitynews.in/

करन बान लीन्हेउ करि छंदू। मथारि भएउ छल मिला अनंदू
मानत भोग गोपीचंद भोगी। लै उपसवा जलंधर जोगी
लै कान्हहि था अकरूर अलोपी। कठिन बिछोउ जिले किमि गोपी
सारस जोरी किमि हरी मारि गएउ किन खग्गि
झुरि झुरि पंजरि धनि भई बिरह के लागि अग्गि। 9

(ग) मन रे तन कागद का पुतला
लागै बूंद बिनसि जाइ छिन मैं, गरब करै क्या इतना
माटी खोदहिं भींत उसारै, अंध कहै घर मेरा
आबै तलब बांधि लै चालै, बहुरि न करि है फेरा
खोट कपट करि यहु धन जोरयौ, लै धरती मैं गाड्यौं
रोक्यो घटि सास नहीं निकसै ठौर-ठौर सब छाड्यौ
कहै कबीर नट नाटिका थाके मदला कौन बजावै
गये पषनियां उभरी बाजी को काहु कै आवै। 9

अथवा

जतन बिनु मृगनि खेत उजारे
टारे टरत नहीं निस बासुरि, बिडरत नहीं बिडारे
अपने अपने रस के लोभी करतब न्यारे-न्यारे
अति अभिमान बदत नहीं काहू, बहुत लोग पचि हारे
बुधि मेरी किरषी, गुर मेरौ बिझुका, आखिर दोई रखवारे
कहै कबीर अब खान न दैहूँ, बरिया भली संभारे

(घ) बड़ सुख-सार पाओल तुअ तीरे
छोड़इत निकट नयन बह नीरे
कर जोरि बिनमओं बिमल तरंगे
पुनदरसन होए पुनमति गंगे
एक अपराध छेमब मोर जानि
परसल भाय पाए तुम पानी
कि करब जप-तप जोग धेआने
जनम कृतारथ एकहि सनाने,
भनइ विद्यापति समदओं तोही
अन्तकाल जनु विसरह तोही 9

अथवा

माधव कत तोर करब बड़ाई
उपमा तोहर कहब ककरा हम, कहि तहुँ अधिक लजाई
जौं श्रीखंड सौरभ अति दुरलभ-तौ पुनि काठ कठोरे

https://universitynews.in/

https://universitynews.in/

जौं जगदीस निसाकर तौं पुनः एकहि पच्छ इजारे
मनि समान औरों नहि नहि दोसर, तनिकर पायर नामे
कनक कदलि छोट लज्जित भए रह की कहु ठामहि ठामे। 9

2. ''पद्मावती समय' में शृंगार और वीर रसों का समुचित विधा हुआ है, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि अन्य रसों को इसमें स्थान ही प्राप्त नहीं हुआ है।'' इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिये। 16

अथवा

सिद्ध कीजिये कि 'पृथ्वीराज रासो' आदिकाल की रासो काव्य परम्परा की शीर्षस्थ काव्य कृति है। 16

3. ''जायसी एक सूफी मुसलमान थे और मुसलमानी दर्शन के प्रति उनकी पूर्ण आस्था थी। इस कथन के आलोक में जायसी के दार्शनिक विचारों का प्रतिपादन कीजिये।'' 16

अथवा

'नागमति वियोग खंड' के आधार पर नागमति के विरह की मार्मिकता को स्पष्ट कीजिये।16

4. ''कबीर निर्गुण भक्त थे या सगुण?'' स्पष्ट करते हुए उनकी भक्तिभावना का विवेचन कीजिये। 16

अथवा

''समाज सुधारक के रूप में कबीर का स्थान सर्वथा अक्षुण्ण है।'' इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिये।

5. गीतिकाव्य की दृष्टि से विद्यापति-पदावली की समीक्षा कीजिये।

अथवा

''विद्यापति वस्तुतः रूप सौन्दर्य और प्रेम के अद्भुत चितेरे कवि हैं।'' इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिये। 16

https://universitynews.in/